पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

एम. ए. हिंदी: भाग 1 और 2

जून 2013 से (50 : 50 पैटर्न)

शैक्षणिक वर्ष–2013–14 से

प्रस्तुत पाठ्यक्रम की रचना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली की 'मॉडेल पाठ्यचर्या' के अनुसार की गई है।

- एम.ए. हिंदी प्रथम सत्र और द्वितीय सत्र के इस पाठ्यक्रम का अध्ययन व अध्यापन एक साथ जून 2013 से आरंभ होगा।
- संपूर्ण पाठ्यक्रम का विभाजन चार सत्रों (दो वर्ष) के लिए होगा। विद्यार्थियों को निर्धारित पाठ्यक्रम में से प्रथम सत्र के लिए प्रश्नपत्र 1 से 4 तक का और द्वितीय सत्र के लिए प्रश्नपत्र 5 से 8 तक, तृतीय सत्र के लिए प्रश्नपत्र 9 से 12 तक और चतुर्थ सत्र के लिए प्रश्नपत्र 13 से 16 तक का अध्ययन करना होगा।
- 'हिंदी' का विशेष स्तर पर अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के लिए सामान्य स्तर और विशेष स्तर के प्रश्नपत्रों का अध्ययन करना होगा।
- प्रश्नपत्र 2, 3, 4, 6, 7, 8, 10, 11, 12, 14, 15, 16 विशेष स्तर के रहेंगे। इनमें से प्रश्नपत्र 4 और प्रश्नपत्र 8 के अंतर्गत 4–4 विकल्प रखे गए हैं। प्रश्नपत्र 12 और प्रश्नपत्र 16 के अंतर्गत 3–3 विकल्प रखे गए हैं। विद्यार्थियों को इनमें से प्रति सत्र किसी एक ही वैकल्पिक प्रश्नपत्र का चयन करना होगा।
- किसी विशेष विषय में विशेषता प्राप्त करने के लिए प्रश्नपत्र 4 और प्रश्नपत्र 8 के अंतर्गत प्रति सत्र के लिए 4–4 विकल्प रखे गए हैं। प्रश्नपत्र 12 और प्रश्नपत्र 16 के अंतर्गत 3–3 विकल्प रखे गए हैं। विद्यार्थी अपने अध्ययन केंद्र /महाविद्यालय में पढ़ाए जानेवाले विकल्पों में से किसी एक ही विकल्प का अध्ययन कर सकता है।

Dr. P.V. Kotame
Hindi BOS
Chairman

एम ए (हिंदी)
पाठ्यक्रम की रूपरेखा
जून 2013 से (50 : 50 पैटर्न)
एम. ए. (हिंदी) प्रथम सत्र

कुलः 60 तासिकाएँ (प्रत्येक इकाई के लिए 15 घंटे)

चारों प्रश्नपत्रों के लिए प्रथम सत्र में 'अंतर्गत लिखित परीक्षा' होगी	–	50 अंक
सत्रांत परीक्षा	–	50 अंक
कुल	–	100 अंक

प्रश्नपत्र 1 : सामान्य स्तर : प्राचीन और मध्ययुगीन काव्य
(अमीर खुसरो और जायसी)

प्रश्नपत्र 2 : विशेष स्तर : आधुनिक हिंदी कथा साहित्य
(उपन्यास और कहानी)

प्रश्नपत्र 3 : विशेष स्तर : भारतीय साहित्यशास्त्र

प्रश्नपत्र 4 : विशेष स्तर : वैकल्पिक

विशेष साहित्यकारः

अ) कबीर

आ) तुलसीदास

इ) नाटककार सुरेंद्र वर्मा

ई) कवि रामधारी सिंह 'दिनकर'

जून 2013 से (50 : 50 पैटर्न)
एम. ए. (हिंदी) द्‌वितीय सत्र

कुल 60 तासिकाएँ (प्रत्येक इकाई के लिए 15 घंटे)

चारों प्रश्नपत्रों के लिए द्‌वितीय सत्र में 'मौखिक परीक्षा' होगी	–	50 अंक
सत्रांत परीक्षा	–	50 अंक
कुल	–	100 अंक

प्रश्नपत्र 5 : सामान्य स्तर : मध्ययुगीन हिंदी काव्य (सूरदास, बिहारी और भूषण)

प्रश्नपत्र 6 : विशेष स्तर : आधुनिक हिंदी नाटक और निबंध

प्रश्नपत्र 7 : विशेष स्तर : पाश्चात्य साहित्यशास्त्र

प्रश्नपत्र 8 : विशेष स्तर : वैकल्पिक : विशेष विधा तथा अन्य

क) हिंदी उपन्यास

ख) यात्रा साहित्य

ग) प्रयोजनमूलक हिंदी

घ) हिंदी दलित साहित्य

प्रथम सत्र

प्रश्नपत्र 1: सामान्य स्तर :

प्राचीन और मध्ययुगीन काव्य

(अमीर खुसरो तथा जायसी)

उद्देश्य:

1. हिंदी साहित्य की आदिकालीन तथा भक्तिकालीन काव्य प्रवृत्तियों की जानकारी देना ।
2. छात्रों को प्राचीन तथा मध्ययुगीन काव्य–कृतियों का परिचय कराना।
3. प्राचीन तथा मध्ययुगीन कवियों की काव्य कला से छात्रों को अवगत कराना।
4. छात्रों को हिंदी की प्राचीन तथा मध्ययुगीन काव्य परंपरा से परिचित कराना।
5. छात्रों को प्राचीन तथा मध्ययुगीन हिंदी भाषा से अवगत कराना।
6. छात्रों में प्राचीन तथा मध्ययुगीन काव्य अध्ययन के माध्यम से समीक्षात्मक दृष्टि विकसित कराना।

अध्यापन पद्धति:

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण ।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा ।
3. दृक्–श्राव्य माध्यमों / साधनों का प्रयोग ।
4. पी. पी. टी. /भाषा प्रयोगशाला का प्रयोग।
5. अतिथि विशेषज्ञों के व्याख्यान ।
6. अध्ययन यात्रा का आयोजन करना।

पाठयपुस्तकें :

1) अमीर खुसरो और उनका हिंदी साहित्य

संपादक : डॉ भोलानाथ तिवारी

प्रकाशक : प्रभात प्रकाशन, आसफ अली रोड, नई दिल्ली – 110 002

ससंदर्भ व्याख्या के लिए रचनाएँ :

अ) पहेलियाँ– क. अंतर्लिपिका– 1, 4, 12, 15, 17, 24, 28, 29 = 08

ख. बहिर्लिपिका– 13, 18, 20, 21, 23, 26, 28, 37, 46, = 09

आ) मुकरियाँ– 7, 9, 11, 15, 19, 30, 48, 55, 63, 70 = 10

इ) गीत– 2, 5, 7 = 03

2) पद्मावत : मलिक मुहम्मद जायसी

संपादक : वासुदेवशरण अग्रवाल

प्रकाशक : साहित्य सदन, चिरगाँव झाँसी

ससंदर्भ व्याख्या के लिए खंड़ :

1. मानसरोदक खंड़
2. नागमति वियोग खंड़

अध्ययनार्थ विषयः

1. अमीर खुसरो के काव्य में समाज
2. अमीर खुसरो के गीतों में संवेदनशीलता
3. अमीर खुसरो की पहेलियों में लोकरंजकता
4. अमीर खुसरो की मुकरियों में लोकरंजकता
5. अमीर खुसरो के निस्बतें, दो सखुने और ढकोसलों में मनोरंजन
6. अमीर खुसरो का खड़ीबोली हिंदी के विकास में योगदान
7. अमीर खुसरो की भाषा
8. अमीर खुसरो की काव्य कला
9. अमीर खुसरो के काव्य की देन
10. पद्मावत में प्रेम भाव
11. पद्मावत में सौंदर्य वर्णन
12. पद्मावत में विरह वर्णन
13. पद्मावत में प्रकृति चित्रण
14. पद्मावत में चरित्र चित्रण

15. पद्मावत में इतिहास और कल्पना
16. पद्मावत की महाकाव्यात्मकता
17. पद्मावत की भाषा तथा अलंकार योजना
18. जायसी की काव्य कला

संदर्भ ग्रंथः

1. अमीर खुसरो – डॉ. हरदेव बाहरी
2. खुसरो की हिंदी कविता– ब्रजरत्न दास
3. जायसी के पद्मावत का मूल्यांकन – प्रो. हरेंद्रप्रताप सिन्हा
4. महाकवि जायसी और उनका काव्य – डॉ इकबाल अहमद
5. मलिक मुहम्मद जायसी और उनका काव्य – डॉ शिवसहाय पाठक
7. जायसी पद्मावत काव्य और दर्शन – डॉ गोविंद त्रिगुणायत
8. पद्मावत में काव्य, संस्कृति और दर्शन – डॉ द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
9. पद्मावत का काव्य सौंदर्य – डॉ चंद्रबली पांड़ेय
10. हिंदी के प्रतिनिधि कवि – डॉ. सुरेश अग्रवाल

प्रश्नपत्र 2 : विशेष स्तर

आधुनिक हिंदी कथा साहित्य

(उपन्यास और कहानी)

उद्देश्य:

1. गद्य की प्रमुख विधाओं के तात्विक स्वरूप का परिचय देना ।
2. प्रमुख गद्य विधाओं के विकासक्रम की जानकारी देना ।
3. विधा विशेष के तात्विक स्वरूप एवं ऐतिहासिक विकास के परिप्रेक्ष्य में रचना विशेष का महत्व समझने एवं मूल्यांकन करने की क्षमता बढ़ाना ।
4. रचना के आस्वादन एवं समीक्षण की क्षमता विकसित करना ।

अध्यापन पद्धति:

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण ।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा ।
3. दृक्–श्राव्य माध्यमों / साधनों का प्रयोग ।
4. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान ।

पाठ्यपुस्तकें:

1. उपन्यास– कलिकथा: वाया बाइपास– अलका सरावगी

प्रकाशक : आधार प्रकाशन, 267 सेक्टर 16 पंचकोला, हरियाणा–134 113

2. हिंदी की श्रेष्ठ कहानियाँ
संपादक– डॉ. सुरेश बाबर, डॉ. विट्ठलसिंह ढाकरे
प्रकाशक : अरुणोदय प्रकाशन,
21–ए अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली – 110 002

अध्ययनार्थ विषयः

1. हिंदी उपन्यास विधा का विकास
2. विवेच्य रचनाकार का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
3. कलिकथाः वाया बाइपास : संवेदना और शिल्प
4. कलिकथाः वाया बाइपास : चरित्र तत्व
5. कलिकथाः वाया बाइपास : संवाद तत्व
6. कलिकथाः वाया बाइपास : देशकाल एवं वातावरण
7. कलिकथाः वाया बाइपास : उद्देश्य
8. कलिकथाः वाया बाइपास : शैलीपक्ष
9. कलिकथाः वाया बाइपास : शीर्षक की सार्थकता
10. हिंदी कहानी विधा का विकास
11. कहानी विधा के तत्व तथा आलोचना : हिंदी की श्रेष्ठ कहानियों के संदर्भ में

हिंदी की श्रेष्ठ कहानियाँ

1. यही मेरा वतन	–	प्रेमचंद
2. पुरस्कार	–	जयशंकर प्रसाद
3. उसकी माँ	–	पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'
4. हंसा जाई अकेला	–	मार्कण्डेय
5. वह क्या था?	–	हरिशंकर परसाई
6. रिमाइण्डर	–	राजेन्द्र यादव
7. सज़ा	–	मन्नू भंडारी
8. मनहूसाबी	–	ममता कालिया
9. वह मैं ही थी	–	मृदला गर्ग
10. लिटरेचर	–	संजीव
11. मुंबई कांड	–	ओमप्रकाश वाल्मीकि
12. इस जंगल में	–	दामोदर खड़से

संदर्भ ग्रंथः

1. अठारह उपन्यास : राजेंद्र यादव
2. हिंदी उपन्यास : सौ वर्ष – संपा रामदरश मिश्र
3. समकालीन हिंदी उपन्यास – डॉ विवेकी राय
4. उपन्यास : स्थिति और गति – डॉ चंद्रकांत बांदिवडेकर
5. आज का हिंदी उपन्यास – डॉ इंद्रनाथ मदान
6. प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यासों की शिल्पविधि : डॉ सत्यपाल चुघ
7. नई कहानी का स्वरूप विवेचन – डॉ इंदु रश्मि
8. नई कहानी के विविध प्रयोग – शशिभूषण पांडेय शीतांषु
9. समकालीन हिंदी कहानी – डॉ पुष्पपाल सिंह
10. नई काहानी की भूमिका – कमलेश्वर
11. नई कहानी : संदर्भ और प्रकृति – देवीशंकर अवस्थी
12. भीष्म साहनी के साहित्य का अनुशीलन– डॉ सुरेश बाबर
13. उत्तर शती का हिंदी साहित्य– संपा डॉ सुरेशकुमार जैन
14. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य : डॉ. राजेंद्र खैरनार

प्रथम सत्र
प्रश्नपत्र 3 : विशेष स्तर
भारतीय साहित्यशास्त्र

उद्देश्यः

1. छात्रों को भारतीय साहित्यशास्त्र का परिचय देना।
2. छात्रों को भारतीय साहित्यशास्त्र के विकासक्रम से परिचित कराना।
3. छात्रों को भारतीय साहित्यशास्त्र के सिद्धांतों का ज्ञान कराना।
4. साहित्य और साहित्यशास्त्र के सहसंबंधों से छात्रों को अवगत कराना।
5. छात्रों को साहित्यशास्त्रीय चिंतन से परिचित कराना।
6. छात्रों को भारतीय साहित्यशास्त्र के सिद्धांतों में साम्य, वैषम्य एवं उसके कारणों का ज्ञान कराना।
7. छात्रों को साहित्यशास्त्रीय समीक्षा का महत्व अवगत कराना।
8. साहित्यशास्त्रीय अध्ययन के माध्यम से छात्रों में समीक्षात्मक दृष्टि विकसित करना।

अध्यापन पद्धतिः

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण ।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा ।
3. दृक्–श्राव्य माध्यमों / साधनों का प्रयोग ।
4. पी. पी. टी./भाषा प्रयोगशाला का प्रयोग।
5. अतिथि विशेषज्ञों के व्याख्यान ।

अध्ययनार्थ विषयः

1. **रस सिद्धांतः**
   रस का स्वरूप, भरतमुनि का रससूत्र, रस के अवयव (अंग), रस निष्पत्ति, रस निष्पत्ति संबंधी भट्टलोल्लट, शंकुक, भट्टनायक तथा अभिनव गुप्त द्वारा की गई व्याख्याओं का विवेचन, साधारणीकरण की अवधारणा, करुण रस का आस्वाद।
2. **अलंकार सिद्धांतः**
   अलंकार शब्द की व्युत्पत्ति, परिभाषा, अलंकार सिद्धांत का स्वरूप, अलंकार और अलंकार्य, अलंकारों का मनोवैज्ञानिक आधार, अलंकार और रस, काव्य में अलंकार का स्थान।
3. **रीति सिद्धांतः**

रीति शब्द की व्युत्पत्ति, रीति की परिभाषा, रीति संप्रदाय, रीति भेद, रीति और गुण, रीति और शैली।

4. **ध्वनि सिद्धांतः**

ध्वनि शब्द की व्युत्पत्ति, ध्वनि की परिभाषा, ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि और स्फोट सिद्धांत, ध्वनि और शब्द–शक्ति, ध्वनि के भेद– अभिधामूलक ध्वनि (संलक्ष्यक्रम व्यंग्य ध्वनि, असंलक्ष्यक्रम व्यंग्य ध्वनि) और लक्षणामूलक ध्वनि, ध्वनि के आधार पर काव्य के भेद, ध्वनि सिद्धांत का महत्व।

5. **वक्रोक्ति सिद्धांतः**

वक्रोक्ति की परिभाषा, कुंतक पूर्व वक्रोक्ति विचार, वक्रोक्ति सिद्धांत का स्वरूप, वक्रोक्ति के भेदों का सोदाहरण परिचय, वक्रोक्ति का महत्व।

6. **औचित्य सिद्धांतः**

औचित्य का स्वरूप, आचार्य क्षेमेन्द्र पूर्व औचित्य विचार, आचार्य क्षेमेन्द्र का औचित्य विचार, औचित्य के भेद, अन्य सिद्धांतों के संदर्भ में औचित्य का महत्व।

संदर्भ ग्रंथः

1. काव्यशास्त्र की रूपरेखा– डॉ. रामदत्त भारद्वाज
2. भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत– डॉ. कृष्णदेव शर्मा
3. काव्यशास्त्र– डॉ. भगीरथ मिश्र
4. भारतीय काव्यशास्त्र– डॉ. विजयपाल सिंह
5. भारतीय काव्यशास्त्र एवं पाश्चात्य साहित्य–चिंतन–डॉ. सभापति मिश्र
6. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ. बच्चन सिंह
7. भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र–डॉ. सुरेशकुमार जैन एवं प्रा. महावीर कंड़ारकर
8. साहित्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धांत–डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी
9. रीतिकाव्य की भूमिका–डॉ. नगेंद्र
10. भारतीय काव्यशास्त्र–(खंड़–1 और 2)–आचार्य बलदेव उपाध्याय
11. भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत–डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त
12. भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत– डॉ. तेजपाल चौधरी
13. भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र–प्रो. हरिमोहन
14. भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत–डॉ. गोविंद त्रिगुणायत
15. भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत–डॉ. जालिंदर इंगळे
16. भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत–डॉ. कृष्णदेव झारी

प्रथम सत्र

प्रश्नपत्र 4 : विशेष स्तर : वैकल्पिक

(अ) विशेष साहित्यकार : कबीर

उद्‌देश्यः

1. छात्रों को तत्कालीन परिस्थितियाँ (दार्शनिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक) के परिप्रेक्ष्य में कबीर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय देते हुए हिंदी को उनके प्रदेय की जानकारी देना।
2. छात्रों को कबीर की काव्यगत शक्ति और सीमाओं से परिचित कराना।
3. छात्रों को कबीर के काव्य की प्रासंगिकता से अवगत कराना।

अध्यापन पद्‌धतिः

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक्–श्राव्य माध्यामों / साधनों का प्रयोग।
4. पद प्रस्तुति।
5. अतिथि विद्‌वानों के व्याख्यान

पाठ्य ग्रंथः

कबीर ग्रंथावली

संपादक : श्यामसुदंर दास

प्रकाशक : नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी

ससंदर्भ व्याख्या के लिए केवल निम्नलिखित छंद :

1. गुरुदेव कौ अंग : 3, 6, 12, 14, 15, 16, 21, 26, 33, 34 = 10
2. विरह कौ अंगः 4, 5, 6, 7, 9, 11, 12, 14, 15, 18, 20, 21, 22, 23, 25, 26, 33, 35, 41, 45 = 20
3. परचा कौ अंग : 1, 3, 9, 10, 11, 12, 14, 16, 17, 21, 22, 24, 27, 31, 32, 35,36, 39, 43, 44, 45, 46 = 22
4. निहकर्मी पतिव्रता कौ अंग : 2, 3, 10, 11, 14 = 05
5. चितावणी कौ अंग : 1, 4, 8, 12, 16, 19, 20, 34, 44, 45 = 10

6. सूरा तन कौ अंग : 18, 19, 20, 21, 24, 26 = 06
7. काल कौ अंग : 1, 13, 14, 15, 20 = 05
8. विद्या कौ अंग : 2, 3, 4, 6, 8, 9, 10 = 07
9. पद : 1, 8, 11, 16, 40, 43, 55, 59, 92, 111, 117, 156, 180, 186, 198, 250, 251, 274, 290, 329, 331, 332, 338, 346, 394, 400, 402 = 27

अध्ययनार्थ विषयः

1. हिंदी की निर्गुण काव्यधारा का विकास
2. संत काव्य परंपरा और कबीर
3. कबीर की जीवनी और व्यक्तित्व
4. कबीर के धार्मिक विचार
5. कबीर का विद्रोह
6. कबीर के सामाजिक विचार
7. कबीर काव्य में समन्वय
8. कबीर का प्रेम तत्व और विरह भावना
9. कबीर का रहस्यवाद
10. कबीर के राम
11. कबीर की दार्शनिकता– ब्रह्म, जीव, माया, जगत, मोक्ष
12. कबीर की उलटबासियॉ और प्रतीक पद्धति
13. कबीर काव्य की प्रासंगिकता
14. कबीर का भक्त कवियों में स्थान

संदर्भ ग्रंथः

1. कबीर : हजारीप्रसाद द्विवेदी
2. कबीरः संपा विजयेंद्र स्नातक
3. कबीर की विचारधारा : डॉ गोविंद त्रिगुणायत
4. कबीर साहित्य की परंपरा : आ. परशुराम चतुर्वेदी
5. कबीर चितंन और सर्जन : संपा. आनंदप्रकाश दीक्षित
6. कबीर : एक विवेचन –डॉ सरनामसिंह शर्मा 'अरुण'
7. नाथ और संत साहित्य : डॉ नागेंद्रनाथ उपाध्याय
8. हिंदी संतों का उलटबाँसी साहित्य : डॉ रमेशचंद्र मिश्रा
9. निर्गुण कवियों का सामाजिक आदर्श : विमल मेहता
10. कबीर साधना और साहित्य : डॉ प्रतापसिंह चौहान
11. कबीर एक अनुशीलन : डॉ रामकुमार वर्मा
12. कबीर का रहस्यवाद –डॉ रामकुमार वर्मा
13. युग पुरुष कबीर – रामचंद्र वर्मा
14. कबीर चिंतन –डॉ ब्रजभूषण शर्मा
15. कबीर : डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी का प्रक्षिप्त चिंतन– डॉ धर्मवीर भारती
16. कबीर के आलोचक–डॉ धर्मवीर

प्रथम सत्र

प्रश्नपत्र 4 : विशेष स्तर वैकल्पिक

आ) विशेष साहित्यकार : कवि तुलसीदास

पाठ्य पुस्तकें:

1. रामचरित मानस– अयोध्या कांड़
   प्रकाशक : जगत भारती प्रकाशन, सी–3–77, दूरवाणी नगर, ए. डी. ए. नैनी, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण–2009, मूल्य: 80/–

   केवल निम्नलिखित पद:
   संसदर्भ के लिए पद: 1से 100 तक कुल 100 पद।

2. विनयपत्रिका– संपादक: वियोगी हरि,
   प्रकाशक : सस्ता साहित्य मंड़ल, एन–77, कनॉट सर्कल, नई दिल्ली–110 001
   संस्करण–छठवॉं : 1997   मूल्य: 75/–

   संसदर्भ के लिए पद:

   1, 5, 19, 36, 41, 48, 68, 78, 88, 101, 105, 106, 132, 153, 162,167, 173, 174, 179, 187, 189, 198, 212, 216, 254= 25 पद।

अध्ययनार्थ विषय:

1. तुलसीदास: व्यक्तित्व एवं कृतित्व– सामान्य परिचय
2. तुलसीदास की भक्ति भावना
3. तुलसीदास की दार्शनिकता
4. रामचरितमानस का कथानक
5. रामचरितमानस का महाकाव्यत्व
6. रामचरितमानस: चरित्र–चित्रण
7. तुलसीदास का मर्यादावाद
8. रामचरितमानस: प्रकृति–चित्रण
9. तुलसीदास का लोकनायकत्व

10. रामचरितमानसः भाषा–शैली
11. तुलसीदास के राम
12. तुलसीदास का हिंदी साहित्य में स्थान
13. विनयपत्रिका का हेतु
14. विनयपत्रिकाः वर्ण्य विषय
15. विनयपत्रिकाः समन्वय भाव
16. विनयपत्रिका में भक्ति
17. विनयपत्रिका में दास्य–भाव
18. विनयपत्रिका में तुलसी का मन को उद्‌बोधन
19. विनयपत्रिका में गीति–तत्व
20. विनयपत्रिका का कला–पक्ष
21. भक्ति काव्य में विनयपत्रिका का स्थान

संदर्भ ग्रंथ

1. तुलसी काव्य मीमांसा : डॉ उदयभानुसिंह
2. तुलसी दर्शन मीमांसा : डॉ उदयभानुसिंह
3. तुलसी और उनका काव्य : डॉ उदयभानुसिंह
4. तुलसीदास और उनका काव्य : रामनरेश त्रिपाठी
5. तुलसीदास और उनका युग : राजपति दीक्षित
6. तुलसी साहित्य के बदलते प्रतिमान : चंद्रभानु रावत
7. विश्वकवि तुलसी और उनका काव्य : डॉ रामप्रसाद मिश्र
8. तुलसी की साहित्य साधना : डॉ लल्लन राय
9. तुलसीदास : वस्तु और शिल्प –डॉ आनंदप्रकाश दीक्षित
10. तुलसी साहित्य में नीति, भक्ति और दर्शन : डॉ हरिश्चंद्र वर्मा
11. तुलसी साहित्य : विवेचन और मूल्यांकन–डॉ देवेंद्रनाथ शर्मा, डॉ. वचनदेव कुमार
12. तुलसी काव्य का सांस्कृतिक अध्ययन : डॉ. जितेंद्रनाथ पांडेय
13. तुलसीदास : जीवनी और विचारधारा–डॉ राजाराम रस्तोगी

14. तुलसी दर्शन : डॉ बलदेवप्रसाद मिश्र
15. तुलसीदास : संपा. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
16. महाकवि तुलसीदास और युग संदर्भ : डॉ भगीरथ मिश्र
17. गोस्वामी तुलसीदास : डॉ अशोक कामत
18. तुलसी का काव्य सौदर्य : डॉ राममूर्ति त्रिपाठी
19. तुलसी साहित्य की भूमिका : रामरतन भटनागर
20. तुलसीदास : चिंतन और कला– संपा. डॉ. इंद्रनाथ मदान
21. रामचरितमानस : अयोध्याकांड – डॉ योंगेंद्रप्रताप सिंह
22. तुलसी का मानस : डॉ. मुंशीराम शर्मा
23. रामचरितमानस में भक्ति : डॉ सत्यनारायण शर्मा
24. तुलसी वाङ्मय विमर्श : डॉ. कुंदनलाल जैन
25. मानस चरित्र कोश : डॉ. भ. ए. राजूरकर
26. तुलसी के भक्त्यात्मक गीत : डॉ वचनदेव कुमार
27. विनयपत्रिका : एक मूल्यांकन – डॉ हरिचरण शर्मा
28. विनयपत्रिका : दार्शनिक तथा कलात्मक विवेचन – डॉ. राजकुमार अवस्थी
29. तुलसी संदर्भ : डॉ नगेंद्र
30. गोस्वामी तुलसीदास : आ रामचंद्र शुक्ल
31. हिंदी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि : द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
32. तुलसीदास और उनका काव्यः डॉ. रामदत्त भारद्वाज
33. रामचरितमानसः तुलनात्मक अनुशीलनः डॉ. सज्जनराम केणी
34. तुलसी की जीवनभूमिः डॉ. चंद्रबली पांडेय
35. विनयपत्रिकाः एक तुलनात्मक अध्ययनः डॉ. ओंकारप्रसाद त्रिपाठी
36. विनयपत्रिकाः आलोचना एवं भाष्यः डॉ. गोपीनाथ तिवारी
37. लोककवि तुलसीः डॉ. सरला शुक्ल
38. गोस्वामी तुलसीदासः डॉ. मायाप्रसाद पाण्डेय
39. तुलसी की भाषाः जनार्दन सिंह
40. तुलसीदासः काव्य कला और दर्शनः डॉ. रामगोपाल शर्मा

प्रथम सत्र

प्रश्नपत्र 4 : विशेष स्तर वैकल्पिक

इ) विशेष साहित्यकार : नाटककाकार सुरेंद्र वर्मा

उद्देश्य :

1. नाटक के स्वरूप और विशेषताओं से परिचित कराना ।
2. हिंदी नाट्य साहित्य के विकासक्रम की जानकारी देना ।
3. विषय, शिल्प, भाषा, मंचीयता आदि आधारों पर नाटकों से परिचित कराना ।
4. सुरेंद्र वर्मा के नाटकों के आधार पर नाट्यकला से अवगत कराना ।
5. हिंदी नाट्य साहित्य में सुरेंद्र वर्मा के स्थान और योगदान से परिचित कराना ।

पाठ्यपुस्तकें :–

1. **सेतुबंध – (तीन नाटक में संकलित) सुरेंद्र वर्मा, प्र.सं. 1972**
2. **सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक– सुरेंद्र वर्मा–प्र.सं.1973**
3. **आठवाँ सर्ग – सुरेंद्र वर्मा – प्र.सं. 1976 ।**
4. **रति का कंगना – सुरेंद्र वर्मा ।**

अध्ययनार्थ विषय :–

1. भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि से नाटक के स्वरूप एवं तत्वों का परिचय
2. हिंदी नाटक साहित्य का विकास
3. हिंदी रंगमंच का विकास
4. हिंदी नाटक और रंगमंच
5. हिंदी नाटक और प्रयोगधर्मिता
6. सुरेंद्र वर्मा : व्यक्तित्व और कृतित्व
7. सुरेंद्र वर्मा का नाट्यचिंतन
8. पठित नाटकों के आधार पर सुरेंद्र वर्मा की नाट्यकला का विवेचन
9. हिंदी नाटक को सुरेंद्र वर्मा का योगदान
10. हिंदी रंगमंच के क्षेत्र में सुरेंद्र वर्मा का स्थान–सामान्य परिचय

संदर्भ ग्रंथ :

1. हिंदी नाटक : प्रगति और प्रभाव – डॉ. दशरथ ओझा
2. हिंदी नाटक : सिद्धांत और विवेचन – गिरीश रस्तोगी
3. आधुनिक हिंदी नाटक : डॉ. नगेंद्र
4. हिंदी नाटकों की शिल्प विधि का विकास – डॅा. शांति मलिक
5. आधुनिक हिंदी नाटक : चरित्र सृष्टि के आयाम – डॉ. लक्ष्मी राय
6. हिंदी नाटक आज तक : डॉ. वीणा गौतम
7. नई–रंगचेतना और हिंदी नाटककार – जयदेव तनेजा
8. आधुनिक हिंदी नाटकों की प्रयोगधर्मिता – डॉ. सत्यवती त्रिपाठी
9. समसामयिक हिंदी नाटकों के खंड़ित व्यक्तित्व अंकन – डॉ. टी. आर. पाटील
10. हिंदी रंगमंच : विविध आयाम : डॉ. रेखा गुप्ता
11. बीसवी शताब्दी का हिंदी नाटक और रंगमंच – गिरीश रस्तोगी
12. पहला रंग : देवेंद्रराज अंकुर
13. साठोत्तर हिंदी नाटकों का रंगमंचीय अध्ययन – राकेश वत्स
14. सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में मंचीयता – देवेंद्र गुप्ता
15. आज के हिंदी रंग नाटक : परिवेश और परिदृश्य – जयदेव तनेजा
16. नाट्य परिवेश – कन्हैयालाल नंदन

प्रथम सत्र

प्रश्न पत्र 4 : विशेष स्तर वैकल्पिक

ई) विशेष साहित्यकार : कवि रामधारी सिंह 'दिनकर'

उद्देश्य:

1. विशेष साहित्यकार के रूप में कवि दिनकर के साहित्यिक व्यक्तित्व का परिचय देना।
2. युगीन पृष्ठभूमि के परिप्रेक्ष्य में दिनकर की काव्य–कृतियों का परिचय देना।
3. निर्धारित प्रमुख रचनाओं के सूक्ष्म अध्ययन तथा अन्य कृतियों के सामान्य अध्ययन के माध्यम से कवि दिनकर की काव्यकला से परिचित कराना।
4. कवि दिनकर की निर्धारित रचनाओं के आस्वादन एवं मूल्यांकन की दृष्टि निर्माण करना।
5. कवि के रूप में दिनकर के योगदान से परिचित कराना।

अध्यापन पद्धति:

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक्–श्राव्य माध्यामों / साधनों का प्रयोग।
4. परिचर्चा ।
5. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

अध्ययन के लिए काव्य–रचनाएँ:

1. **कुरुक्षेत्र**
2. **उर्वशी**
3. **हुंकार**
4. **बापू**

अध्ययनार्थ विषय:

1. नई कविता और दिनकर
2. जन–जागरण संबंधी आधुनिक काव्य–धारा में दिनकर का स्थान
3. दिनकर : जीवनवृत्त एवं कृतित्व
4. दिनकर के प्रबंध काव्य

5. दिनकर के काव्य में प्रकृति–चित्रण
6. दिनकर की काव्य प्रवृत्तियाँ
7. राष्ट्रीय कवि दिनकर
8. दिनकर के काव्य में प्रेमभाव
9. दिनकर के काव्य में युद्ध और शांति
10. दिनकर के काव्य में प्रगतिवादी भावनाएँ
11. दिनकर के काव्य में आस्था एवं विश्वास
12. दिनकर के काव्य में दार्शनिकता
13. दिनकर के काव्य में प्रकृति और प्रेम
14. दिनकर का काव्य–सौष्ठव
15. कुरुक्षेत्र का काव्य–सौष्ठव
16. कुरुक्षेत्र काव्य का अनुभूति–पक्ष
17. कुरुक्षेत्र काव्य का अभिव्यक्ति पक्ष
18. उर्वशी काव्य का काव्य–सौष्ठव
19. उर्वशी काव्य का अनुभूति–पक्ष
20. उर्वशी काव्य का अभिव्यक्ति पक्ष
21. हुंकार काव्य का काव्य–सौष्ठव
22. हुंकार काव्य का अनुभूति–पक्ष
23. हुंकार काव्य का अभिव्यक्ति पक्ष
24. बापू काव्य का काव्य–सौष्ठव
25. बापू काव्य का अनुभूति–पक्ष
26. बापू काव्य का अभिव्यक्ति पक्ष

संदर्भ ग्रंथः

1. युगाचरण दिनकर— डॉ. सावित्री सिन्हा
2. दिनकर व्यक्तित्व एवं कृतित्व— कु. पद्मावती एम. ए.
3. हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि— डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
4. राष्ट्रीय कवि दिनकर—शेखरचंद्र जैन
5. रामधारी सिंह 'दिनकर'—राजेश शर्मा
6. दिनकर का उर्वशी—राजनारायण राय
7. राष्ट्रीय कवि दिनकर और उनकी काव्य कला— डॉ. शेखरचंद्र जैन
8. नयी कविता स्वरूप और समस्या— डॉ. जगदीश गुप्त
9. नयी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर— डॉ. संतोष कुमार तिवारी
10. रामधारी सिंह 'दिनकर'— लोकदेव नेहरू
11. दिनकर और उनकी काव्य—कृतियाँ— पं. शिवचंद्र शर्मा
12. उर्वशी संवेदना और शिल्प— डॉ. गीकाराम शर्मा
13. आधुनिक काव्य— डॉ. भगीरथ मिश्र
14. दिनकर का काव्य— लीलाधर त्रिपाठी
15. दिनकर और उनकी साधना— प्रताप जैस्वाल
16. छायावादोत्तर हिंदी कविता प्रमुख प्रवृत्तियाँ— डॉ. त्रिलोचन पाण्डेय
17. दिनकर के काव्य में मानवतावादी प्रेम—चेतना— डॉ. मधुबाला
18. दिनकर के प्रबंध काव्य : लोक तत्व एवं शिल्प— डॉ. आर. पी. एस. चौहान
19. हिंदी के खण्डकाव्यों में युगबोध— डॉ. राज भारद्वाज
20. दिनकर काव्य में वस्तु—विधान— डॉ. इन्दु वशिष्ठ
२१. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी काव्य में महाभारत के पात्र - डॉ. जे. आर. बोरसे

पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

द्वितीय सत्र

प्रश्नपत्र 5 : सामान्य स्तर

मध्ययुगीन हिंदी काव्य

(सूरदास, बिहारी तथा भूषण)

उदेद्श्यः

1. हिंदी का आदिकालीन, भक्तिकालीन तथा रीतिकालीन काव्य प्रवृतियों की जानकारी देना ।
2. तत्कालीन प्रमुख कवि तथा उनकी कृतियों से परिचय कराना ।
3. पाठ्य कृतियों के संदर्भ में समीक्षा की क्षमता बढ़ाना ।

अध्यापन पद्धतिः

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण ।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा ।
3. दृक्– श्राव्य माध्यमों / साधनों का प्रयोग ।
4. अध्ययन यात्रा ।
5. अतिथि विशेषज्ञों के व्याख्यान ।

पाठ्य पुस्तकें:

1) सूरदास : भ्रमरगीत सार
संपादक : आचार्य रामचंद्र शुक्ल
प्रकाशक : श्री गोपालादास पोरवाल, साहित्य सेवा सदन, वाराणसी 1
ससंदर्भ व्याख्या के लिए पद :
पद क्रम – 21 से 60 = 40
2) बिहारी रत्नाकर : श्री. जगन्नाथ 'रत्नाकर'
प्रकाशक : प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, संस्करण– 2006, मूल्य– 60/–

ससंदर्भ व्याख्या के लिए दोहे :

1, 22, 25, 32, 35, 38, 45, 60, 67, 73, 76, 94, 126, 152, 181, 201, 217, 251, 277, 283, 301, 318, 322, 345, 373, 388, 425, 472, 496, 530, 543, 588, 610, 632, 642, 677, 687, 689, 710, 713 = 40

3) रीति काव्य धारा : संपादक : डॉ रामचंद्र तिवारी / डॉ रामफेर त्रिपाठी
प्रकाशक : विश्वविदयालय प्रकाशन, वाराणसी
ससंदर्भ व्याख्या के लिए कवि भूषण के पद : 01 से 21 = 21

अध्ययनार्थ कवि:

1) सूरदास
2) बिहारी
3) भूषण

अध्ययनार्थ विषय:

1. भ्रमरगीत की दार्शनिक पृष्ठभूमि
2. सूरदास के काव्य में योग बनाम भक्ति
3. सूरदास के काव्य में वियोग वर्णन
4. भ्रमरगीत : एक उपालंभ काव्य
5. सूर के भ्रमरगीत की विशेषताएँ
6. सूर की गोपियाँ
7. सूर के उद्धव
8. सूर की गोपियों का वागवैदग्ध्य
9. भ्रमरगीत में व्यंजना
10. भ्रमरगीत में विरह वर्णन
11. भ्रमरगीत में प्रकृति चित्रण
12. भ्रमरगीत का कलापक्ष
13. सूर की भाषा
14. रीतिसिद्ध कवि बिहारी
15. बिहारी का शृंगार वर्णन
16. बिहारी का संयोग वियोग निरूपण
17. बिहारी का सौदर्य चित्रण
18. बिहारी की बहुज्ञता
19. बिहारी की भक्तिभावना

20. मुक्तककार बिहारी
21. बिहारी का शृंगारेतर काव्य
22. बिहारी का काव्य सौंदर्य
23. बिहारी की अलंकार योजना
24. बिहारी की भाषा शैली
25. सतसई परंपरा में बिहारी का स्थान
26. भूषण कालीन परिस्थितियाँ
27. भूषण के काव्य में वीरत्व
28. भूषण के काव्य में राष्ट्रीय चेतना
29. भूषण के काव्य के विषय
30. भूषण का काव्य शिल्प
31. भूषण का सौंदर्य चित्रण
32. भूषण के काव्य में अलंकार योजना
33. भूषण के काव्य की भाषा
34. भूषण के काव्य का शैली
35. भूषण काव्य में रस योजना
36. हिंदी काव्य को भूषण का योगदान

संदर्भ ग्रंथ:

1. सूरदास और उनका साहित्य : डॉ मुंशीराम शर्मा
2. भारतीय साधना और सूर साहित्य – डॉ हरवंशलाल शर्मा
3. सूर की काव्य कला – मनमोहन गौतम
4. सूर साहित्य – डॉ हजारीप्रसाद द्विवेदी
5. सूर की भाषा – डॉ प्रेमनारायण टंड़न
6. कृष्णकाव्य और सूर : सांस्कृतिक संदर्भ – डॉ प्रेमशंकर
7. सूरदास – आ रामचंद्र शुक्ल
8. सूरदास : एक पुनरावलेकन – डॉ ओम प्रकाश शर्मा
9. महाकवि सूरदास – डॉ. आ. नंददुलारे वाजपेजी
10. भ्रमरगीत का काव्य सौदर्य – डॉ सत्येंद्र पारिख
11. भ्रमरगीत : एक अन्वेषण – डॉ सत्येंद्र
12. सूर की गोपिका : एक मनोवैज्ञानि अध्ययन – डॉ प्रभारानी भाटिया
13. सूरदास – डॉ ब्रजेश्वर वर्मा
14. बिहारी का तुलनात्मक अध्ययन – पं पद्मसिंह शर्मा
15. बिहारी और उनका साहित्य – डॉ हरवंशलाल शर्मा / डॉ परमानंद शास्त्री
16. बिहारी काव्य का मूल्यांकन – किशोरी लाल
17. षट्कवि : विवेचनात्मक अध्ययन – डॉ ओमप्रकाश शर्मा
18. सूर की मौलिकता – डॉ वेदप्रकाश शास्त्री
19. महाकवि विदयापति – डॉ कृष्णानंद पीयूष
20. हिंदी के प्राचीन कवि – डॉ दयानंद शर्मा
21. रीतिकालीन काव्य पर संस्कृत काव्य का प्रभाव – डॉ दयानंद शर्मा
22. संक्षिप्त भूषण – डॉ. भगवानदास तिवारी
23. भूषण ग्रंथावली– डॉ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

द्वितीय सत्र

प्रश्नपत्र 6 : विशेष स्तर

आधुनिक हिंदी नाटक और निबंध

उद्देश्य:

1. गद्य की प्रमुख विधाओं के तात्विक स्वरूप का परिचय देना।
2. प्रमुख गद्य विधाओं के विकासक्रम की जानकारी देना।
3. विधा विशेष के तात्विक स्वरूप एवं ऐतिहासिक विकास के परिप्रेक्ष्य में रचना विशेष का महत्व समझने एवं मूल्यांकन करने की क्षमता बढ़ाना।
4. रचना के आस्वादन एवं समीक्षण की क्षमता विकसित करना।

अध्यापन पद्धति:

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण ।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा ।
3. दृक् –श्राव्य माध्यमों /साधनों का प्रयोग ।
4. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान ।

पाठ्य पुस्तकें:

1} नाटक : अभंग गाथा – नरेंद्र मोहन,
प्रकाशक : जगतराम एण्ड सन्स्, 24/4855 अन्सारी रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली –110002
प्रथम प्रकाशन: 2000 मूल्य: 80रु.

2} हिंदी निबंध माला
हिंदी निबंध माला : संपादक–– डॉ. सुरेश बाबर, डॉ. नीला बोर्वणकर
प्रकाशक – अरुणोदय प्रकाशन,
21– ए अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली– 110 002

निबंध का नाम			निबंधकार
1.	उत्साह	–	आ. रामचंद्र शुक्ल
2.	पुस्तकालयः मिलन का उत्तम मार्ग	–	डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी
3.	नीलकंठ उदास	–	कुबेरनाथ राय
4.	संस्कृति है क्या?	–	रामधारी सिंह दिनकर
5.	ताज	–	डॉ.रघुवीर सिंह
6.	ठूँठा आम –	–	भगवतशरण उपाध्याय
7.	मिले तो पछताए	–	इंद्रनाथ मदान
8.	कलाकार का सत्य	–	विष्णू प्रभाकर
9.	अंधी जनता और लंगडा जनतंत्र	–	विद्यानिवास मिश्र
10.	समाधि लेख	–	डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय
11.	बुद्धिजीवी	–	डॉ. शंकर पुणतांबेकर
12.	पानी है अनमोल	–	डॉ. श्रीराम परिहार

अध्ययनार्थ विषयः

1. हिंदी नाटक तथा निबंध विधाओं का विकास ।
2. 'अभंग गाथा' नाटक की शिल्पगत संरचना का परिचय ।
3. पठित निबंधों की विशेषताएँ ।
4. पठित निबंधों में विचारात्मकता ।
5. पठित निबंधों की भाषा–शैली ।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी रंगकर्म : दशा और दिशा – डॉ. जयदेव जनेजा
2. समकालीन हिंदी नाटक और रंगमंच – डॅा. जयदेव तनेजा
3. समसामयिक हिंदी नाटकों में खंडित व्यक्तित्व अंकन – डॉ. टी. आर. पाटील
4. आधुनिक हिंदी नाटकों में प्रयोगधर्मिता – डॉ. सत्यवती त्रिपाठी
5. हिंदी नाटक : आज–कल – डॉ. जयदेव तनेजा
6. सातवें दशक के प्रतीकात्मक नाटक – रमेश गौतम
7. युगबोध और हिंदी नाटक – डॉ. सरिता वशिष्ठ
8. नव्य हिंदी नाटक –डॉ. सावित्री स्वरूप
9. हिंदी के प्रतिनिधि निबंधकार –डॉ. द्‌वारिकाप्रसाद सक्सेना
10. हिंदी साहित्य में निबंध और निबंधकार –डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त
11. हिंदी के प्रमुख निबंधकार : रचना और शिल्प – डॉ. गणेश खरे
12. हिंदी निबंध और निबंधकार – डॉ. ठाकुर प्रसाद सिंह
13. उत्तरशती का हिंदी साहित्य : संपा. डॉ. सुरेशकुमार जैन
14. तुका म्हणे, भाग 1 और 2 (मराठी)– डॉ. दिलीप धोंड़गे

द्वितीय सत्र
प्रश्नपत्र 7 : विशेष स्तर
पाश्चात्य साहित्यशास्त्र

उद्देश्य:

1. छात्रों को पाश्चात्य साहित्यशास्त्र का परिचय देना ।
2. छात्रों को पाश्चात्य साहित्यशास्त्र के विकासक्रम का परिचय देना ।
3. छात्रों को पाश्चात्य साहित्यशास्त्र के सिद्धांतों का ज्ञान कराना ।
4. छात्रों को साहित्यशास्त्रीय समीक्षा का महत्व अवगत कराना।
5. छात्रों को पाश्चात्य साहित्यशास्त्र के सिद्धांतो में साम्य, वैषम्य एवं उसके कारणों का ज्ञान करना ।
6. छात्रों को नई समीक्षा के सिद्धांतो का ज्ञान कराना ।
7. छात्रों को आलोचना की प्रणालियों तथा नई अवधारणाओं का परिचय देना ।
8. साहित्यशास्त्रीय अध्ययन के द्वारा छात्रों में समीक्षात्मक दृष्टि विकसित करना ।

अध्यापन पद्धति:

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण ।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा ।
3. दृक–श्राव्य माध्यमों / साधनों का प्रयोग ।
4. पी. पी. टी./ भाषा प्रयोगशाला का प्रयोग कराना।
5. अतिथि विशेषज्ञों के व्याख्यान ।

अध्ययनार्थ विषय:

1. प्लेटो : काव्य सिद्धांत, अनुकरण सिद्धांत

2. अरस्तू के काव्य सिद्धांत :

क) **अनुकरण सिद्धांत** : अनुकरण सिद्धांत की व्याख्या, प्लेटो और अरस्तू के अनुकरण विषयक विचारों की तुलना ।

ख) **विरेचन सिद्धांत** : स्वरूप विवेचन, विरेचन का महत्व, त्रासदी विवेचन ।

3 **उदात्त सिद्धांत** : उदात्त की व्याख्या, उदात्त के अंतरंग तथा बहिरंग तत्व, काव्य में उदात्त का महत्व, लोंजाइनस का योगदान ।

4 आई. ए. रिचर्डस् का मनोवैज्ञानिक मूल्यवाद और संप्रेषण सिद्धांत :
काव्य मूल्यों की मनोवैज्ञानिक व्याख्या, संप्रेषण सिद्धांत की परिभाषा और स्वरूप, संप्रेषण सिद्धांत का महत्व, आई. ए. रिचर्डस् का योगदान ।

5. इलियट का निर्वैयक्तिकता सिद्धांत और वस्तुनिष्ठ प्रतिरूपता सिद्धांत :
इलियट की निर्वैयक्तिकता संबंधी अवधारणा, वस्तुनिष्ठ प्रतिरूपता सिद्धांत, इलियट का योगदान ।

6. विविध वाद तथा आलोचना की प्रणालियाँ :

क) प्रतीकवाद, बिंबवाद, अभिव्यंजनावाद, अस्तित्ववाद, यथार्थवाद, संरचनावाद, विखंड़नवाद, उत्तर आधुनिकता– (केवल स्वरूप विवेचन तथा महत्व)

ख) आलोचना की विभिन्न प्रणालियॉं– सैद्धांतिक, व्याख्यात्मक, मनोवैज्ञानिक, मार्क्सवादी, ऐतिहासिक, तुलनात्मक तथा सौंदर्यशास्त्रीय आलोचना।

संदर्भ ग्रंथ :

1. अरस्तू का काव्यशास्त्र – डॉ. नगेंद्र
2. समीक्षालोक – डॉ. भगीरथ मिश्र
3. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत – डॉ. कृष्णदेव शर्मा
4. पाश्चात्य काव्यशास्त्र– डॉ. देवेंद्रनाथ शर्मा
5. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत – डॉ. शांतिस्वरुप गुप्त
6. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : अधुनातन संदर्भ – डॉ. सत्यदेव मिश्र
7. पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत, ~~विवेचन~~ एक विश्लेषण – डॉ. ओमप्रकाश शर्मा
8. आलोचना के आधुनिकतावाद और नई समीक्षा – डॉ. शिवकरण सिंह
9. उत्तर आधुनिकता और उत्तर संरचनावाद – सुधीश पचौरी
10. उत्तर आधुनिक साहित्यिक विमर्श – सुधीश पचौरी
11. उत्तर आधुनिकता : कुछ विचार, संपा. देवीशंकर नवीन, सुशांतकुमार मिश्र
12. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन– डॉ. बच्चनसिंह
13. पाश्चात्य साहित्यालोचन और हिंदी पर उसका प्रभाव – डॉ. रवींद्रसहाय वर्मा
14. हिंदी आलोचना : उद्‌भव और विकास : डॉ. भगवत्स्वरूप मिश्र
15. आधुनिक समीक्षा : डॉ. भगवत्स्वरूप मिश्र
16. तुलनात्मक साहित्यशास्त्र – डॉ. विष्णुदत्त राकेश
17. हिंदी आलोचना के नए वैचारिक सरोकार – डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल
18. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत – डॉ. मैथिलीप्रसाद भारद्‌वाज
19. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के रिद्‌धांत –डॉ. भगवत्स्वरूप मिश्र
20. पाश्चात्य साहित्यलोचन और हिंदी पर उसका प्रभाव– डॉ. रवींद्रसहाय वर्मा
21. तुलनात्मक साहित्यशास्त्र– डॉ. विष्णुदत्त राकेश
22. आधुनिक समीक्षा– डॉ. भगवत्स्वरूप मिश्र
23. साहित्य : विविध वाद – ओमप्रकाश शर्मा

द्वितीय सत्र

प्रश्नपत्र 8 : विशेष स्तर (वैकल्पिक)
विशेष विधा तथा अन्य

(क) हिंदी उपन्यास

उद्देश्य:

1. छात्रों को उपन्यास विधा का तात्विक परिचय देना।
2. हिंदी विधा के विकास की जानकारी देना ।
3. हिंदी उपन्यास की विभिन्न प्रवृत्तियों से छात्रों को अवगत कराना।
4. हिंदी उपन्यासों में अभिव्यक्त मानवी जीवन का परिचय देना।
5. हिंदी उपन्यासों में अभिव्यक्त जीवन विषयक दृष्टिकोण का मूल्यांकन कराना।
6. उपन्यास विधा का अन्य विधाओं के साथ तुलनात्मक परिचय देना।
7. छात्रों में उपन्यास साहित्य का आस्वादन, अध्ययन एवं मूल्यांकन की क्षमता बढाना।
8. उपन्यास विधा की ओर सर्जक, समीक्षा, अनुवाद एवं शोध की दृष्टि से छात्रों को प्रेरित करना, आदि।

अध्यापन पद्धति:

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक–श्राव्य साधनों / माध्यमों का प्रयोग।
4. पी. पी. टी. /भाषा प्रयोगशाला का प्रयोग।
5. विशेषज्ञों के व्याख्यान।
6. अध्ययन यात्रा का आयोजन करना।

विशेष अध्ययन के लिए उपन्यास:

1. **चित्रलेखा– भगवतीचरण वर्मा**
   प्रकाशक– राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., 1 बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली.
2. **गोदान– प्रेमचंद**
   प्रकाशक– राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., 1 बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली
3. **अलग अलग वैतरणी – शिवप्रसाद सिंह**
   प्रकाशक – लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

4. परिशिष्ट – गिरिराज किशोर

प्रकाशक– राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., 1 बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली

अध्ययनार्थ विषयः

1. उपन्यास की परिभाषा, स्वरूप तथा उपन्यास के तत्व।
2. हिंदी उपन्यास का विकासक्रम– प्रेमचंद पूर्व उपन्यास, प्रेमचंद युगीन उपन्यास, प्रेमचंदोत्तर उपन्यास।
3. हिंदी उपन्यासों की प्रवृत्तियाँ– सामाजिक, तिलस्मी, जासूसी, राजनीतिक, आँचलिक, ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक, जीवनीपरक उपन्यास आदि का अध्ययन।
4. उपन्यासों में भाव पक्ष तथा कला पक्ष का महत्व।
5. उपन्यास की विविध शैलियों का अध्ययन–वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक, पूर्वदीप्ति, चेतनाप्रवाही, संवादात्मक, पत्रात्मक, डायरी आदि।
6. चित्रलेखा, गोदान, अलग–अलग वैतरणी, परिशिष्ट उपन्यासों का अभिव्यक्ति पक्ष तथा कला पक्ष।
7. चित्रलेखा, गोदान, अलग–अलग वैतरणी और परिशिष्ट उपन्यास के प्रमुख पात्रों का चरित्र–चित्रण।
8. चित्रलेखा, गोदान, अलग–अलग वैतरणी और परिशिष्ट उपन्यासों का विशेष अध्ययन।

संदर्भ ग्रंथः

1. हिंदी का गद्य साहित्य– डॉ. रामचंद्र तिवारी
2. उपन्यास स्थिति और गति– डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर
3. उपन्यास का काव्यशास्त्र– डॉ. बच्चन सिंह
4. उपन्यास की शर्त– जगदीश नारायण श्रीवास्तव
5. उपन्यास– स्वरूप और संवेदना राजेंद यादव
6. भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में चित्रित समाज जीवन– डॉ. विनय चौधरी
7. शिवप्रसाद सिंह का उपन्यास साहित्य – डॉ. राजेन्द्र खैरनार
8. महाकाव्यात्मक उपन्यासों की शिल्पविधि – डॉ. शंकर मुदगल
9. प्रगतिवादी हिंदी उपन्यास– डॉ. बदरी प्रसाद
10. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य– डॉ. राजेंद्र खैरनार
11. श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का शिल्प विधान– डॉ. पी. व्ही. कोटमे
12. गिरिराज किशोर का उपन्यास साहित्य एक अनुशीलन– डॉ. सुरेश साळुंके
13. साहित्यिक विधाएँः सैद्धांतिक पक्ष– डॉ. मधु धवन
14. हिंदी साहित्य नए क्षितिज– डॉ शशिभूषण सिंहल
15. हिंदी उपन्यास समकालीन विमर्श– डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी
16. आलोचना की सामाजिकता– मैनेजर पांडेय
17. समकालीन हिंदी उपन्यासः वर्ग एवं वर्ण संघर्ष– जालिंदर इंगले
18. आँचलिक उपन्यासों में वर्ण एवं वर्ग संघर्ष– डॉ. अशोक धुलधुले
19. कथाकार संजीव– संपा. डॉ. गिरीश काशिद
20. आधुनिक हिंदी उपन्यास, भाग–1 – संपा भीष्म् साहनी
21. आधुनिक हिंदी उपन्यास, भाग–2 – संपा डॉ. नामवर सिंह
22. प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यास–नए मूल्य–शशि गुप्ता
23. प्रेमचंद का सौंदर्यशास्त्र– संपा–नंदकिशोर नवल
24. प्रेमचंद के उपन्यास कथा संरचना– डॉ. मीनाक्षी श्रीवास्तव
25. शिवप्रसाद सिंह के कथा साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन– डॉ. टी. मीना कुमारी
26. भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में चित्रित समाज जीवन– डॉ. विनय चौधरी
27. हिंदी के आँचलिक उपन्यासों में दलित जीवन – डॉ. भरत सगरे
28. भीष्म साहनी के साहित्य का अनुशीलन– डॉ. सुरेश बाबर
29. हिंदी उपन्यास सृजन और सिद्धांत– नरेंद्र कोहली
30. हिंदी उपन्यासों की दिशाएँ–डॉ वेदप्रकाश अमिताभ
31. गोदानः संवेदना और शिल्प– डॉ. चंद्रशेखर कर्ण
32. हिंदी के श्रेष्ठ उपन्यास और उपन्यासकार – डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना

द्वितीय सत्र

प्रश्नपत्र 8 : विशेष स्तर (वैकल्पिक)
विशेष विधा तथा अन्य

(ख) हिंदी यात्रा साहित्यः स्वरूप और विकास

उद्देश्यः

1. छात्रों को यात्रा साहित्य विधा का तात्विक परिचय देना।
2. हिंदी विधा के विकास की जानकारी देना ।
3. हिंदी यात्रा साहित्य की विभिन्न प्रवृत्तियों से छात्रों को अवगत कराना।
4. हिंदी यात्रा साहित्य में अभिव्यक्त मानवी जीवन का परिचय देना।
5. हिंदी यात्रा साहित्य में अभिव्यक्त जीवन विषयक दृष्टिकोण का मूल्यांकन करना।
6. यात्रा साहित्य विधा का अन्य विधाओं के साथ तुलनात्मक परिचय देना।
7. छात्रों में यात्रा साहित्य का आस्वादन, अध्ययन एवं मूल्यांकन की क्षमता बढाना।
8. यात्रा साहित्य विधा की ओर सर्जक, समीक्षा, अनुवाद एवं शोध की दृष्टि से छात्रों को प्रेरित करना, आदि।

अध्यापन पद्धतिः

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक–श्राव्य साधनों/ माध्यमों का प्रयोग।
4. पी. पी. टी./भाषा प्रयोगशाला का प्रयोग।
5. विशेषज्ञों के व्याख्यान।
6. अध्ययन यात्रा का आयोजन करना।

अध्ययनार्थ विषयः

यात्रा साहित्य

1. यात्रा : परिभाषा, स्वरूप, क्षेत्र
2. यात्रा साहित्यः परंपरा और विकास
3. हिंदी यात्रा साहित्यः विकासक्रम
4. यात्रा साहित्य की विशेषताएँ
5. साहित्य में यात्रा परंपराएँ

6. यात्रा साहित्यः तत्व विवेचन
7. यात्रा साहित्य का अन्य गद्य विधाओं से संबंध
8. यात्रा साहित्य का वर्गीकरण
9. भारतेंदु युग
10. द्विवेदी युग
11. उत्तर द्विवेदी युग
12. स्वातंत्र्योत्तर युग
13. उत्तरशती का युग
14. इक्कीसवीं सदी

अध्ययनार्थ रचनाएँ:

1. **मेरी जीवन यात्रा, भाग 2– राहुल सांस्कृत्यायन**
2. **एक बूँद सहसा उछली– सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'**
3. **चीड़ों पर चाँदनी– निर्मल वर्मा**
4. **सूर्य मंदिरों की खोज में–डॉ. श्याम सिंह शशि**

संदर्भ ग्रंथः

1. हिंदी यात्रा–साहित्य : स्वरूप और विकास– डॉ. मुरारीलाल शर्मा
2. यात्रा–साहित्य का उद्भव और विकास – डॉ.सुरेंद्र माथुर
3. यात्रा साहित्य – डॉ. तुकाराम पाटील, डॉ. नीला बोर्वणकर
4. मेरी विश्व यात्राएँ– डॉ. श्याम सिंह शशि
5. घुमक्कड़ शास्त्र– राहुल सांस्कृत्यायन
6. यात्रा–साहित्य विधा : शास्त्र और इतिहास– डॉ. बापूराव देसाई
7. कुछ रंग कुछ गंध– सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
8. यात्रा साहित्य– पं. माधवप्रसाद मिश्र
9. यात्रा साहित्य– स्वामी सत्यदेव परिव्राजक
10. यात्रा–साहित्य– डॉ. भगवतशरण उपाध्याय
11. भाषा (भारतीय यायावर साहित्य विशेषांक) मई–जून– 2006, वर्ष–45, अंक–5, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली
12. यायावर साहित्य: अवधारणा और अवदान (राहुल सांकृत्यायन और श्यामसिंह शशि के संदर्भ में) किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. 2009 – डॉ. तुकाराम पाटील; माधुरी आर्य

द्वितीय सत्र

प्रश्नपत्र 8 : विशेष स्तर (वैकल्पिक)
विशेष विधा तथा अन्य

(ग) प्रयोजनमूलक हिंदी

उद्देश्य:

1. छात्रों को हिंदी भाषा की प्रमुख प्रयुक्तियों और प्रयोजनमूलक शैलियों का परिचय देना ।
2. छात्रों को हिंदी में कम्प्यूटर के प्रयोग की विधि से अवगत कराना ।
3. छात्रों में हिंदी के कार्य साधक प्रयोग की कुशलता विकसित करना ।
4. छात्रों को पत्राचार के विविध प्रकारों की जानकारी कराना ।
5. छात्रों में अन्य भाषा से हिंदी भाषा में अनुवाद की क्षमता को विकसित करना ।
6. छात्रों को पारिभाषिक शब्दावली के माध्यम से प्रयोजनमूलक हिंदी से परिचित करना ।
7. छात्रों को विज्ञापन तंत्र से परिचित कराकर विज्ञापन के व्यावहारिक ज्ञान को वृद्धिंगत करना ।
8. छात्रों में राष्ट्र के प्रति प्रेम एवं सामाजिक प्रतिबद्धता की भावना विकसित करना ।

अध्यापन पद्धति:

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण ।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा ।
3. दृक् – श्रव्यो माध्यमो /साधनों का प्रयोग ।
4. राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के लिए विभिन्न कार्यालयों की अध्ययन यात्रा ।
5. विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत अधिकारी विद्वानों के व्याख्यान ।

पाठ्यक्रम

1) **हिंदी भाषा और उसके प्रयोजनमूलक रूप:**

क) प्रयोजनमूलक हिंदी : परिभाषा एवं स्वरूप।

ख) हिंदी भाषा के विविध रूप – सामान्य भाषा, मातृभाषा, माध्यम भाषा, संपर्क भाषा, अंतर्राष्ट्रीय भाषा ।

ग) प्रयोजनमूलक हिंदी की विभिन्न प्रयुक्तियाँ

2) **कार्यालयीन हिंदी:**

क) राजभाषा हिंदी :संवैधानिक प्रावधान, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य ।

ख) कार्यालयीन हिंदी : स्वरूप और विशेषताएँ

ग) कार्यालयीन हिंदी (राजभाषा) के प्रमुख प्रकार—प्रारूपण, पत्र लेखन, संक्षेपण, पल्लवन, टिप्पण आदि।

घ) प्रयुक्ति (रजिस्टर) की अवधारणा

3) **विज्ञापन लेखनः**

क) विज्ञापन लेखन : विज्ञापन का स्वरूप, प्रकार और महत्व, भाषिक विशेषताएँ, विज्ञापन लेखन, अभ्यास ।

ख) आजीविकापरक क्षेत्र

4) **अनुवादः**

क) अनुवादः परिभाषा और स्वरूप, विशेषताएँ और प्रकार

ख) हिंदी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका

ग) साहित्यानुवादः काव्यानुवाद और उसकी समस्याएँ

घ) कार्यालयी हिंदी और अनुवाद

च) कोश—कार्य

छ) सारानुवाद

ज) दुभाषिया प्रविधि

5) **पारिभाषिक शब्दावली**:

परिभाषा, शब्द की विशेषताएँ, शब्द के प्रकार, शब्द निर्माण की प्रवृत्तियाँ, शब्दों की रचना, शब्द और उनके प्रयोग से संबंद्ध अशुद्धियाँ

6) **हिंदी कम्प्यूटिंगः**

क) कम्प्यूटरः परिचय एवं महत्व

ख) कम्प्यूटर और भाषा प्रयोग

ग) वेब पब्लिशिंग—परिचय, विशेषताएँ

घ) हिंदी के वेब साईटस् और शब्द कोश साईटस्

च) इंटरनेट सामग्री सृजन (कंटेंट क्रिएशन)

छ) इंटरनेट पर हिंदी का भविष्य

ज) विविध क्षेत्रों में कम्प्यूटर का योगदानः

1. शिक्षा क्षेत्र में कम्प्यूटर
2. बैंकों में कम्प्यूटर
3. खेल जगत में कम्प्यूटर
4. कम्प्यूटर और यातायात
5. व्यवसाय में कम्प्यूटर जगत
6. कम्प्यूटर और मनोरंजन

7) लेखन के मूलभूत सिद्धांत

अ. समाचारपत्र के लिए लेखन के प्रकारः

1. समाचार लेखन
2. विज्ञापन लेखन
3. साक्षात्कार लेखन
4. समीक्षा लेखन
5. कविता लेखन
6. समाचार लेखन एवं संपादन–शीर्षक संरचना
7. व्यावहारिक प्रूफ शोधन, पृष्ठ सज्जा

आ. रेडियो माध्यम के लिए लेखनः

1. रेडियो लेखन के सिद्धांत
2. रेडियो वार्ता लेखन
3. रेडियो नाटक लेखन
4. रेडियो उद्घोषणा लेखन

इ. टेलीविजन माध्यम के लिए लेखनः

1. टेलीविजन टेलीविजन माध्यम के लेखन टेलीविजन समाचार लेखन
2. टेलीविजन धारावाहिक लेखन
3. टेलीविजन विज्ञापन लेखन
4. संवाद लेखन
5. पटकथा लेखन
6. साहित्य की विधाओं का दृश्य माध्यमों में रूपांतरण

ई. सिनेमा के लिए लेखन

1. सिनेमा लेखन के सिद्धांत
2. फीचर फिल्म लेखन
3. वृत्तचित्र लेखन(डाक्यूड्रामा)

संदर्भ ग्रंथः

1. प्रयोजनमूलक हिंदी–डॉ. नरेश मिश्र
2. कम्प्यूटर–आधुनिक विज्ञान का वरदान–राजीव गर्ग
3. प्रयोजनमूलक हिंदीः प्रक्रिया और स्वरूप, कैलाशचंद्र भाटिया
4. विज्ञापन कला– मधु धवन
5. राजभाषा हिंदी का प्रयुक्तिपरक विश्लेषण – डॉ. सुषमा कोंडे, शैलेजा प्रकाशन, 57–पी, कुंज विहार–2, कानपुर–2
6. मीड़िया लेखनः सिद्धांत और व्यवहार–डॉ. चंद्रप्रकाश मिश्र,
7. प्रयोजनमूलक हिंदी और पत्रकारिता–डॉ. दिनेश प्रसाद सिंह
8. प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रूप–डॉ. राजेंद्र मिश्र एवं राकेश शर्मा
9. कम्प्यूटर और हिंदी –डॉ. हरिमोहन
10. कार्यालय हिंदी में प्रयोग की दिशाएँ –संपा. उमा शुक्ल
11. मीडिया लेखन : सिद्धांत और व्यवहार – डॉ. चंद्रप्रकाश
12. मीडिया लेखन – संपा. रमेशचंद्र त्रिपाठी/डॉ. पवन अग्रवाल
13. मीडिया लेखन के सिद्धांत – एन. सी. पंत
14. हिंदी के प्रयोजनमूलक भाषा–रूप –डॉ. माधव सोनटक्के
15. हिंदी में सरकारी कामकाज – रामविनायक सिंह
16. भाषा विज्ञान के सिद्धांत – डॉ. त्रिलोचन पांडेय
17. भारतीय मीडिया : अंतरंग पहचान – संपा. स्मिता मिश्र
18. पटकथा लेखन : एक परिचय – मनोहर श्याम जोशी
19. प्रयोजनमूलक हिंदी – डॉ. माधव सोनटक्के
20. प्रयोजनमूलक हिंदी – डॉ. विनोद गोदरे
21. प्रयोजनमूलक हिंदी – डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव
22. प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रूप – डॉ. राजेंद्र मिश्र / राकेश शर्मा
23. प्रयोजनमूलक हिंदी प्रक्रिया और स्वरूप – डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया
24. प्रयोजनमूलक भाषा और कार्यालयी हिंदी – डॉ. कृष्णकुमार गोस्वामी
25. प्रयोजनमूलक व्यावहारिक हिंदी – डॉ. ओमप्रकाश सिंहल
26. प्रशासन में राजभाषा हिंदी – डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया
27. प्रामाणिक आलेखन और टिप्पण – प्रो. विराज
28. प्रशासनिक और व्यावहारिक पत्रव्यवहार (खंड 1 व 2) ए. ई. विश्वनाथ अय्यर
29. प्रेस कॉन्फ्रेस और भेंटवार्ता – डॉ. नंदकिशोर त्रिरवा
30. राष्ट्रभाषा हिंदी : समस्याएँ और समाधान – डॉ. देवेंद्रनाथ शर्मा
31. राजभाषा के संदर्भ में हिंदी आंदोलन का इतिहास – उदयनारायण दुबे

32. राजभाषा हिंदी – डॉ. भोलनाथ तिवारी
33. राजभाषा हिंदी की काहानी – डॉ रामबाबू शर्मा
34. संघीय राजभाषा के संदर्भ में पारिभाषिक / वैज्ञानिक शब्दावली के निर्माण की समस्याएँ – बलरामसिंह सिरोही
35. संपादन कला एवं प्रूफ पठन – डॉ. हरिमोहन
36. संवाद और संवाददाता – डॉ. राजेंद्र
37. समाचार, फीचर लेखन तथा संपादन कला – डॉ. हरिमोहन
38. सरकारी कार्यालयों में हिदीं का प्रयोग – डॉ. गोपीनाथ श्रीवास्तव
39. साक्षात्कार – मनोहर श्याम जोशी
40. सूचना, प्रौद्योगिकी और जनमाध्याम – प्रो. हरिमोहन
41. उत्तर आधुनिक मीडिया तकनीक –हर्षदेव
42. दृक–श्राव्य माध्यम लेखन – डॉ. राजेंद्र मिश्र /ईशिता मिश्र
43. देवनागरी में यांत्रिक सुविधाएँ –राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली
44. दूरदर्शन : हिंदी के प्रयोजनमूलक विविध प्रयोग –डॉ. कृष्णकुमार रत्तू
45. व्यावहारिक हिंदी – डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया
46. व्यावसायिक संप्रेषण – अनूपचंद भायाणी
47. प्रयोजनमूलक हिंदी अधुनातन आयाम– डॉ. अंबादास देशमुख
48. प्रयोजनमूलक हिंदी– डॉ. मधुकर राठौड़
49. प्रयोजनमूलक हिंदी– डॉ. गोरख थोरात

द्वितीय सत्र

प्रश्नपत्र 8 : विशेष स्तर (वैकल्पिक)
विशेष विधा तथा अन्य

(घ) हिंदी दलित साहित्य

उद्देश्य:

1. छात्रों को दलित विमर्श एवं साहित्य का परिचय कराना।
2. छात्रों को दलित साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि से अवगत कराना ।
3. छात्रों को दलित साहित्य के सौंदर्यशास्त्र से परिचित कराना ।
4. दलित साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन करना।
5. छात्रों को हिंदी साहित्य में दलित साहित्य के योगदान से परिचित कराना ।
6. समीक्षा, अनुवाद एवं शोध की दृष्टि से छात्रों को दलित साहित्य की ओर प्रेरित करना, आदि।

अध्यापन पद्धति:

1. व्याख्यान तथा विश्लेषण ।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा ।
3. दृक्–श्राव्यो माध्यमों /साधनों का प्रयोग ।
4. राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के लिए विभिन्न कार्यालयों की अध्ययन यात्रा ।
5. विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत अधिकारी विद्वानों के व्याख्यान ।

अध्ययनार्थ विषय:

1. दलित साहित्य तथा दलित विमर्श की व्याख्या।
2. दलित साहित्य : अवधारणा और स्वरूप ।
3. हिंदी दलित साहित्य का उद्भव एवं विकास।
4. दलित साहित्य : प्रेरणास्त्रोत और प्रभाव ।

    क) कबीर
    ख) संत रैदास
    ग) महात्मा ज्योतिराव फुले
    घ) कार्ल मार्क्स
    च) डॉ बाबासाहेब आंबेडकर

5. दलित साहित्य पर कबीर, रैदास, महात्मा ज्योतिराव फुले, कार्ल मार्क्स, डॉ बाबासाहेब आंबेडकर, अमेरिकन निग्रो साहित्य आदि का वैचारिक प्रभाव।
6. दलित साहित्य :उद्भव, परंपरा और विकास
7. परंपरागत साहित्य और दलित साहित्य : अभिव्यक्त भाव और भाषा का अंतर तथा साम्य –भेद ।
8. परंपरागत साहित्य और दलित साहित्य : साम्य –भेद ।
9. दलित साहित्य की विशेषताएँ एवं महत्व।
10. दलित साहित्य का अभिव्यक्ति पक्ष तथा कलापक्ष।
11. दलित साहित्य में अभिव्यक्त भारतीय समाज।
12. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र।
13. हिंदी दलित साहित्य की रचनाएँ– जस–तस भई सबेर (उपन्यास), जूठन (आत्मकथा) श्रेष्ठ दलित कहानियाँ– संपा. मुद्राराक्षस, गूँगा नहीं था मैं (कविता संग्रह) इनका विशेष अध्ययन।

अध्ययनार्थ पाठ्यपुस्तकें :

1. **जस–तस भई सबेर – सत्यप्रकाश (उपन्यास)**
2. **जूठन– ओमप्रकाश वाल्मीकि (आत्मकथा)**
3. **श्रेष्ठ दलित कहानियाँ– संपा. मुद्राराक्षस**
4. **गूँगा नहीं था मैं– जयप्रकाश कर्दम (कविता संग्रह)**

संदर्भ ग्रंथः

1. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र–ओमप्रकाश वाल्मीकि
2. दलित हस्तक्षेप– रमणिका गुप्ता
3. अस्पृश्यता एवं दलित चेतना–डॉ. पूरणमल
4. हिंदी साहित्य में दलित अस्मिता– डॉ. कालीचरण स्नेही
5. इक्कीसवीं शती के हिंदी साहित्य में स्त्री एवं दलित विमर्श, डॉ. अशोक धुलधुले
6. भारतीय दलित साहित्यः परिप्रेक्ष्य, संपादक पुन्नीसिंह
7. दलित कहानी संचयन– रमणिका गुप्ता
8. दलित चिंतन का विकास– अभिशप्त चिंतन से इतिहास चिंतन की ओर–डॉ. धर्मवीर
9. उत्तर आधुनिकता और दलित साहित्य– कृष्णदत्त पालीवाल
10. दलित साहित्य–एक मूल्यांकन– प्रो. चमनलाल
11. दलित चेतना साहित्यिक एवं सामाजिक सरोकार– रमणिका गुप्ता
12. हिंदी आंचलिक उपन्यासों में दलित चेतना– भरत सगरे
13. दसवें दशक के हिंदी उपन्यासों में दलित चेतना– वसानी कृष्णावंती पी.
14. दलित चेतना और हिंदी उपन्यास– डॉ. एन. एस. परमार
15. दलित साहित्य और समसामयिक संदर्भ– डॉ. श्रवण कुमार मीणा
16. दलित साहित्य की भूमिका– हरपाल सिंह अरुष
17. हरिजन से दलित– संपा. राजकिशोर
18. भारतीय दलित आंदोलन की रूपरेखा– केवल चंचरीक
19. हिंदी दलित आत्मकथा– डॉ. संजय नवले
20. दलित साहित्य का समाजशास्त्र– हरिनारायण ठाकुर
21. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र–शरणकुमार लिंबाले
22. मार्क्स और आंबेड़कर (मराठी)– डॉ. रावसाहेब् कसबे, अनुवाद– डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे